प्रथम विश्वयुद्ध - कारण

1914 में शुरू होनेवाला 'प्रथम महायुद्ध' एक अचानक घटनेवाली घटना न थी बल्कि यह पिछले चालीस वर्षों के दौरान यूरोपीय परिदृश्य पर घटनेवाली समग्र घटनाक्रम की चरम परिणति थी जिसने विश्वसमुदाय को संकट में डाल दिया। संघर्ष का उद्गम यूरोप के दो सशस्त्र गुटों में बँट जाने से हुआ। दोनों गुट एक-दूसरे से जलते थे और दोनों ओर शक्ति संचय का प्रयत्न जारी था। सेना में बड़ी तेजी से वृद्धि की जा रही थी। साम्राज्यवाद का भूत सबके सिर पर सवार था। विकृत एवं उग्र राष्ट्रीयता यूरोपीय राज्यों का अभिन्न अंग बन चुका था। सभी राज्यों की अपनी-अपनी महत्वकांक्षाएं थी और राज्य विस्तार के नशे में चूर होकर यूरोप के विविध देश शक्ति प्रदर्शन के लिए उतावले हो रहे थे। ऐसे तनावपूर्ण माहौल ने यूरोपीय वातावरण को विषाक्त कर दिया जिसके फलस्वरूप विश्वयुद्ध होना अवश्यंभावी हो गया।

प्रथम महायुद्ध का बुनियादी कारण कूटनीतिक गुप्त संधि प्रणाली था। दरअसल यह प्रणाली जर्मनी का चांसलर बिस्मार्क की देन थी जिसने 1870 के फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के बाद जर्मनी के शत्रु देशों के विरुद्ध इस प्रकार संधि तंत्र तैयार करने का प्रयास किया। इस कदम ने धीरे-धीरे यूरोप को हथियारबंद विरोधी खेमों में बाँट दिया जो कि एकदूसरे से टकराते रहे। सर्वप्रथम जर्मनी ने 1879 में आस्ट्रिया के साथ इस दोतरफा वचनबद्धता के साथ संधि कि यदि रूस दोनों में से किसी एक शक्ति पर आक्रमण करता तो दूसरा उसकी सुरक्षा में सहयोग देगा। 1882 में इटली भी इस गुट में सम्मिलित हो गया। इस प्रकार जर्मनी इटली एवं आस्ट्रिया के मध्य एक त्रिगुट (Triple Alliance) बना जो फ्रांस तथा रूस के विरुद्ध रक्षात्मक तौर पर थी। दूसरी ओर फ्रांस के लिए यह संधि परेशान करनेवाली थी। उसने सुरक्षा के दृष्टिकोण से रूस के साथ 1894 में संधि की। इंग्लैंड पर्याप्त समय से पृथकत्व की नीति का अनुपालन कर रहा था किंतु संधि-प्रतिसंधियों तथा तत्कालीन राजनीति को देखकर उसने भी पार्थक्य-नीति को छोड़कर 1907 में रूस से संधि कर ली। इसप्रकार फ्रांस रूस एवं इंग्लैंड ने 'त्रिदेशीय मैत्री संघ' (Triple Entente) नामक

अलग राजनीतिक संघ कायम कर लिया। इस प्रकार देखा जाये तो यूरोप दो सशस्त्र सैनिक कैम्पों में बँट गया। इन दोनों पक्षों के टकराने के साथ ही यूरोप की स्थिति 'हथियार बंद शांति' समान हो गई। यूरोप की महाद्वीपीय शक्तियाँ हालांकि एक दूसरे के साथ युद्ध तो नहीं कर रही थी लेकिन एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु रूख अपना रही थी जिसके कारण यूरोप के पूरे वातावरण में डर एवं शंका के बादल मँडराने लगे। सभी शक्तियाँ किसी बड़ी टकराव की शंका से ग्रसित होकर तेजी से सैन्यीकरण की ओर अग्रसर हुई।

'सैन्यीकरण' दरअसल गुप्त समझौतें प्रणाली से सीधे जुड़ा था एवं युद्ध के लिए जिम्मेवार कारणों में से एक था। 19वीं सदी में यूरोपीय राष्ट्रों का विश्वास था कि राष्ट्रीय आकांक्षाओं के पूर्ति के लिए युद्ध आवश्यक है। प्राचीन रोमन की कहावत में कि 'यदि तुम शांति चाहते हो तो युद्ध के लिए तैयार रहो' में लोगों को पूर्ण विश्वास थी इसीलिए यूरोपीय राष्ट्रों ने अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाने के लिए अपने देश में सैन्य शिक्षा अनिवार्य कर दी। अनेक यूरोपीय राष्ट्र अपनी आय का अधिकांश हिस्सा युद्ध की तैयारी पर खर्च कर रहे थे। अधिक सैन्य शक्ति महानता की निशानी बन गई। सैनिक तैयारियाँ प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखकर कर रहा था किंतु इससे सुरक्षा की भावना के स्थान पर भय, संदेह एवं परस्पर घृणा का वातावरण उत्पन्न हो रहा था। बढ़ते हुए सैन्यवाद ने यूरोपीय राजनीति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। अब यह विश्वास बढ़ता जा रहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान केवल सैन्य शक्तियों के बल पर ही संभव है। ऐसे उन्मादी वातावरण में सैनिक अधिकारियों का स्थान देश की राजनीति में प्रमुख हो गया और वे असैनिक अधिकारियों पर हावी होते चले गये। जब भी कोई संकट होता तो वे सैन्य अधिकारी इसका समाधान युद्ध में ही खोजते। इस सैन्यवाद और युद्ध मानसिकता ने प्रथम विश्वयुद्ध की स्थिति तैयार कर दी।

उग्र राष्ट्रवाद अथवा विकृत राष्ट्रवाद

प्रथम महायुद्ध के लिए बहुत हद तक जिम्मेवार था। राष्ट्रवाद दरअसल फ्रांसीसी क्रांति की देन थी। जर्मनी एवं इटली का

एकीकरण राष्ट्रवाद के उदय का सकारात्मक परिणाम था। यूरोप के राष्ट्रवाद ने 1870 के पश्चात् उग्र रूप धारण कर लिया था। इसी प्रक्रिया में लोगों के अंदर जातीय गर्व की भावना का विकास तेजी से होने लगा और वे अपने देश को दूसरे देशों से श्रेष्ठ समझने लगे जिसका परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में घातक पड़ा। राष्ट्रवादी भावना की अति ने राष्ट्रों के बीच पहले से बनी खाई को और गहरा कर दिया। उग्र राष्ट्रीयता की यह भावना अन्तर्राष्ट्रीयता के लिए खतरा थी। इसी भावना के तहत फ्रांस जर्मनी से अल्सास-लोरेन प्रदेश प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। राष्ट्रीयता की भावना के कारण ही ऑस्ट्रिया एवं सर्बिया में उत्तरोत्तर शत्रुता बढ़ रही थी। असंतुष्ट बाल्कन जनता की असंतुष्ट राष्ट्रीय आकांक्षाओं ने ही बाल्कन प्रायद्वीप को बारूद का ढेर बना दिया जिसने पूरे यूरोप को कुछ ही अपने घेरे में ले लिया। प्रसिद्ध इतिहासकार एस. बी. फे ने अपनी पुस्तक (The Origins of the World War) में उग्र राष्ट्रवाद को प्रथम विश्वयुद्ध का प्रमुख कारण माना है।

19वीं सदी के अंत में साम्राज्यवादी विस्तार यूरोप के लिए एक समस्या बन गया। वस्तुतः औद्योगिक क्रांति के पश्चात् यूरोप के देशों को कच्चा माल प्राप्त करने एवं कल-कारखानों में निर्मित वस्तुओं को बेचने हेतु बाजारों की आवश्यकता थी। निरंतर बढ़ती जनसंख्या को बसाने के लिए भी नये देशों की आवश्यकता थी फलतः उन्हें अपनी समस्या का समाधान साम्राज्य विस्तार में दिखा। चूंकि एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय देशों का आधिपत्य पहले ही हो गया था तथा जर्मनी एवं इटली साम्राज्यवादी प्रसार के होड़ में देर से शामिल होने के कारण अतृप्त रह गये थे परिणामतः ये देश उन देशों से उपनिवेश छीनना चाहते थे जिन्होंने पहले ही अपना साम्राज्य विस्तार कर लिया था जबकि दूसरे देश 'यथास्थिति' में अपना आर्थिक हित समझते थे। बाल्कन क्षेत्र में रूस और आस्ट्रिया तुर्की के अधिकार को समाप्त कर अपना प्रभुत्व जमाना चाहते थे इस कारण आस्ट्रिया एवं रूस के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई। इसप्रकार साम्राज्यवादी विस्तार की मंशा ने राष्ट्रों के बीच संघर्षों को आवश्यंभावी बना दिया।

यूरोप में इस समय तक कोई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था नहीं थी जो पारस्परिक वार्तालाप के माध्यम से विभिन्न

राष्ट्रों के झगड़ो का समाधान करके युद्ध की संभावना को टाल देती। 1899 और 1907 के हेग सम्मेलनों ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किये तथा युद्धों को रोकने के लिए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का निर्माण किया परंतु इसके पास नियमों के अनुपालन सुनिश्चित कराने संबंधी साधन न थे। गुप्त कूटनीतिक पद्धति के कारण किसी भी राज्य की जनता अथवा प्रतिनिधि सभा को समझौते एवं संधियों की जानकारी नहीं हो पाती थी। इसप्रकार अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अभाव में किसी भी देश पर कोई अंकुश नहीं था और सभी देश इच्छानुसार उचित या अनुचित काम करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र थे।

प्रेस तथा समाचार पत्रों ने युद्ध का वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रवादी उन्माद तथा उत्तेजना बढ़ाने में समाचार पत्र प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। एक दूसरे राष्ट्र की आलोचना समाचार पत्रों के मुख्य विषय वस्तु बन गये। इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कटुतापूर्ण वातावरण का निर्माण हुआ। राष्ट्रवाद के झूठे नारे के प्रभाव में सैनिकों के साथ-साथ आम नागरिक भी एक-दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध के लिए तत्पर दिखने लगे थे। बिस्मार्क ने इस सन्दर्भ में सही टिप्पणी की थी कि- 'प्रत्येक देश किसी न किसी समय अपने प्रेस के कारण ही विपत्ति में फँसता है।'

प्रथम विश्वयुद्ध के लिए जर्मन सम्राट विलियम कैसर का हठी एवं महत्वकांक्षी व्यक्तित्व भी सहायक बना। वह कहता था कि हमारा भविष्य समुद्र पर निर्भर है। उसने जर्मनी को सामुद्रिक शक्ति बनाने का प्रयास किया फलस्वरूप इंग्लैंड की शत्रुता मोल ले ली। उसकी नीति थी - सम्पूर्ण विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना। व्यापारिक देश होने के नाते इंग्लैंड युद्ध के पक्ष में नहीं था जिसे विलियम कैसर इंग्लैंड की कायरता समझता था। उसे यह गलत समझ थी कि इंग्लैंड किसी भी कीमत पर युद्ध टालना चाहेगा। इसप्रकार विलियम कैसर के उग्र, साम्राज्यवादी, निरंकुश चरित्र ने यूरोप को महायुद्ध के कगार पर पहुँचा दिया।

पूरा यूरोप बारूद की ढेर पर बैठा था जिसमें आस्ट्रिया का राजकुमार फ्रांसिस फर्डिनेण्ड एवं उसकी पत्नी की बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में हत्या ने चिंगारी का काम करते हुए

युद्ध का विस्फोट कर दिया। दरअसल बाल्कन प्रदेश में बोस्निया तथा हर्जेगोविना की समस्या जटिल थी। बर्लिन संधि के तहत आस्ट्रिया को इन प्रदेशों का शासन अधिकार मिला था। वह इन प्रदेशों को अपने राज्य में नहीं मिला सकता था। परंतु 1908 में आस्ट्रिया ने बर्लिन संधि को भंग कर इन दोनों प्रदेशों बोस्निया-हर्जेगोविना को अपने प्रदेश में मिला लिया। सर्बिया इससे आहत हुआ क्योंकि ये दोनों प्रदेश स्लाव थे। सर्बिया स्लाव आंदोलन का अग्रणी देश होने के कारण इन पर अपना प्रभुत्व कायम करना चाहता था। बोस्निया के लोगों में सम्राट के प्रति भक्ति भावना उत्पन्न करना राजकुमार फर्डिनेण्ड की यात्रा का मुख्य उद्देश्य था। फलतः राष्ट्रवादी स्लाव उग्रवादियों ने स्लाव मुक्ति के राह में बाधक आस्ट्रिया को आतंकित करने के उद्देश्य से राजकुमार फर्डिनेण्ड की हत्या का षड्यंत्र रचा और 28 जून 1914 को 'गार्विलो प्रिंसिप' नामक व्यक्ति ने सेराजेवो में गोली मारकर हत्या कर दी। आस्ट्रिया ने इसे शाहीय गौरव पर आघात माना एवं बदला लेने के लिए बेचैन हो उठा। यह घटना विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण बना।

आस्ट्रिया ने सर्बिया को कुचल देने का निर्णय लिया एवं युवराज की हत्या के एवज में जवाब-तलब किया। संतोषजनक उत्तर न मिलने की स्थिति में आस्ट्रिया ने 28 July 1914 को सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। सर्बिया के मदद हेतु रूस ने सैन्यशक्ति के साथ भागीदारी दी, फिर जर्मनी द्वारा विनाश आस्ट्रिया का समर्थन किया गया। जब जर्मनी ने बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया तो फलतः इंग्लैंड को भी अपनी सुरक्षा पर खतरा दिखाई देने लगा फलतः उसने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी (Aug. 1914)। जब जर्मनी ने अमेरिकी जहाजों को डूबो दिया तब 1917 में अमेरिका भी युद्ध में इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, सर्बिया के पक्ष में हो गया। इसकी तरफ आस्ट्रिया, जर्मनी, बुलगारिया, तुर्की आदि राष्ट्र थे फलतः यूरोपीय युद्ध ने विनाशकारी विश्वयुद्ध का रूप ले लिया जिसका अंत 1918 में हुआ।

—x—